120 P
619
M

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1236/10.7.1

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 619

'उमेश' ग्रन्थमाला का नवाँ पुष्प

A. S. Raman?
S. I. D. I. STAFF.
CAWNPORE.
21/4/31
481

❀ वन्देमातरम् ❀

महात्मा गांधी

का

संदेश

मरना सभी को एक दिन है मौत से डरना नहीं।
संग्राम है आखीर वीरो अब कसर करना नहीं॥
झंडा तिरंगा हाथ में लेकर निकल घर से पड़ो।
जय बोल भारत मातु की रणक्षेत्र में डट डट लड़ो॥

लेखक तथा प्रकाशक—

पं० उमाचरण दीक्षित 'उमेश'

द्वितीय बार ४००० } सन् १९३० ई० { मूल्य -)॥

891.431
O:648m

॥ ओ३म् ॥

महात्मा गांधी का संदेश

(हरगीतिका छंद)

१-वाचक विप्रो सव गान बन्देमातरम् का कीजिये।
संदेश गाँधी का लगा कर ध्यान फिर सुन लीजिये॥
चलिये उसी अनुसार जिससे क्लेश सारे दूर हों।
आज़ाद भारत वर्ष हो औ गर्व रिपु के चूर हों॥
२-हिन्दू मुसल्मानों सभी अब एक में मिल जाइये।
प्रिय पारसी औ जैन ईसाई न देर लगाइये॥
हैं हिन्द के वासी सभी भाई सगे यह जानलो।
तजि शत्रुता प्राचीन मन से मित्रताई मान लो॥
३-गोरे विदेशी आज भारतवर्ष का धन लूटते।
हमसे लड़ा कर आपको फिर बाज के सम टूटते॥
बनियाँ बने व्यापार करने के लिये आये यहाँ।
कर फूट पैदा भाइयों में राज्य कायम की जहाँ॥
४-लूटा अनेकों भाँति बिल्कुल ही कसर छोड़ी नहीं।
बागी बना कर के निकाला फाँसियाँ भी दीं कहीं॥
मिस्त्री व कारीगर सबों के कर कलम करवा लिये।
कुछ ले गये लंदन लिवा निज धर्म परिवर्तन किये॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 619
Date 16.12.71

५-कारीगरी कर नष्ट भारत को गुलाम बना लिया।
पैदा यहां जो चीज़ उस पै टैक्स जारी कर दिया॥
सरदार सिक्ख दिलीपसिंह को साथ लंदन ले गये।
था पास हीरा कोहनूर छिनाय कर लेते भये॥
६-राज्यें हड़पलीं फ़िर सभी बस! बात ही की बात में।
बे इज्ज़ती की हा! उसी की आगया जो घात में॥
निज देश के हित सर उठाया यदि किसी ने भी कहीं।
हर भांति करके नष्ट भ्रष्ट उसे कुचल डाला वहीं॥
७-है आज दिन मातम मनाना भी हमें उनका मना।
बस वैश्य वैश्यों में इसी से युद्ध बेढ़ब है ठना॥
हैं तोप बन्दूकें मशीनैंगन व बम गोले उधर।
लेकिन अहिंसा, त्याग, शान्ती अस्त्र हैं केवल इधर॥
८-सारी विदेशी वस्तुओं को त्याग फौरन दीजिये।
निज देश में तैयार हों वह यत्न सब मिल कीजिये॥
औ अन्न अपने देश का बाहर न भेजो तुम कभी।
मादक पदार्थ न भूल के सेवन करो त्यागो सभी॥
९-इनकी अदालत जो बनी हैं त्याग उनका भी करो।
औ सत्य कहने में न प्रभु से भी कभी मन में डरो॥
लगान देना बन्द कर दो एक दम से ग्राम में।
सारी लगा दो शक्ति सुस्ती हो न बिलकुल काम में॥
१०-पंचायतें कायम करो चारों दिशा सब ठाम में।
चरखे चलाओ सूत कतवाओ बुनाओ धाम में॥

सीखो कला कौशल सभी चारों दिशा से खोज के।
बनि उद्यमी हो जाव कम से कम रुपैया रोज के॥
११-जो कद्र अपनी चाहते बेकार रहना छोड़ दें।
आज़ाद हो परतन्त्रता के बन्धनों को तोड़ दें॥
कर सूदखोरी ब्याज खाकर भी न पेट फुलाइये।
आत्मा बराबर है गरीबों को न राह भुलाइये॥
१२-कम खर्च करना सादगी से बशर करना सीख लो।
चाहे मिले अमृत तुम्हें पर मांग कर मत भीख लो॥
निज निज घरों में नारियों को भी यही सिखलाय दो।
अबला नहीं सबला उन्हें कर विश्व को दिखलाय दो॥
१३-घर घर चलाओ चक्कियां आटा पिसा घर में धरो।
होकर प्रबल तुम निबल पर आघात करने से डरो॥
राष्ट्रीय विद्यालय करो कायम पढ़ें बालक तहां।
शिक्षा गुलामी की न जिससे मिल सके उनको वहां॥
१४-मुख़्त्यार बैरिस्टर वकीलों से यही बस अर्ज है।
निज देश के नाते समझ लें आपका क्या फर्ज है॥
अब डाक्टरों को औषधी तैयार करना चाहिये।
धन चूस दीनों का उदू का घर न भरना चाहिये॥
१५-अब रंडियों को भी हृदय में ख्याल लाना चाहिये।
व्यभिचार को तजि नृत्य का पेशा उठाना चाहिये॥
गांजा शराब अफीम का ठेका न कोई लें कभी।
जिससे जहां तक देश के नाते बने छोड़ें सभी॥

१६-सब नवयुवक कांग्रेस के फौरनै स्वयंसेवक बनैं।
कर लैं अहिंसा की प्रतिज्ञा दुक्ख सुख कुछ ना गिनैं॥
बलिदान अपना दें अधिक से वे अधिक तादाद में।
जिससे कि कब्जा हो सके अपनी निजी जादाद में॥
१७-होकर खुशी खद्दर सदा प्रहिनैं सभी गृह नारियां।
निज देश के हित युद्ध की वे भी करैं तैयारियां॥
कपड़ा विदेशी बेचने वाले हठी जो हैं यहां।
धरना दुकानों में उन्हीं के देबियां दें जा वहां॥
१८-शरमों हया औ लाज परदा अब सभी वह छोड़ दें।
अबला न बन सबला बनैं परतन्त्रता को तोड़ दें॥
निज शक्ति दुरगा और काली के सदृश पैदा, करैं।
कर वायकाट विदेशियों का दुक्ख भारत के हरें॥
१९-उनके पती को चाहिये निज देशहित रोकें नहीं।
बल्किन बढ़ावैं जोश जिससे काम होवे सब कहीं॥
बेचैं विदेशी बस्त्र जो औ जो खरीदें आन के।
वापिस करावें देबियां उनको तुरत पहिचान के॥
२०-बालक जवानों वृद्ध के मनमें स्वदेशी की लगन।
लग जाय सब निज देश दीवाने बनैं होकर मगन॥
भाई हमारे जो पुलिस की नौकरी हैं कर रहे।
करते हमी पर जुर्म मनमाने न बिलकुल डर रहे॥
२१-हैं पेट के खातिर बने अन्धे न उनको होश है।
मरता न क्या करता मसल इसमें न उनका दोष है॥

सरकार अन्याई उन्हें दे लोभ औ पुचकार के।
है श्वान सम लखवा रही बस एक कौरा डार के॥
२२-लेकिन उन्हें भी चाहिये वे अक्ल से अब काम लें।
दें त्याग ऐसी नौकरी व्यापार कर आराम लें॥
फौजी सिपाही और पल्टन देश का कुछ हित करें।
निज भाइयों पर ज़ुर्म करने से ज़रा मन में डरें॥
२३-गोरे विदेशी सब तरह से अब तुम्हें ठुकरा रहे।
बल पर तुम्हारे ही मगर हैं आप मौज उड़ा रहे॥
काले कुली तुमको बनाकर ठोकरों से मारते।
औ डैम ब्लाडी आदि कह कर हर तरह धिक्कारते॥
२४-तुम जज्ज हो कर भी सदा अंग्रेज अदना से डरो।
निज भाइयों पर ज़ुर्म मनमाने चहे जितने करो॥
यह देख करके भी समझ तुमको अगर आती नहीं।
तो मति तुम्हारी है फिरी शिक्षा तुम्हें भाती नहीं॥
२५-पशु बल तुम्हारा एक दिन यह नष्ट सब हो जायगा।
अब आत्मबल के सामने हरगिज न रहने पायगा॥
यह देश आर्य्यावर्त जिसमें ऋषि अनेकों हो गये।
जिनके ज़रा से रुष्ट होने से करोड़ों खो गये॥
२६-हैं आप भी सन्तान उनकी सोंचलो दिल में ज़रा।
फिर देश अपना क्यों बनाते हो नहीं फूला फरा॥
तुम देख करके मोटरें औ वायुयान जहाज को।
अच्छी बताते हो सदा अन्याइयों की राज को॥

२७-कल और पुरजों ने हमारा देश चापर कर दिया।
धन खींच गोरों ने सभी इंगलैंड में जा भर दिया॥
नलका पिलाकर जल तुम्हें कमजोर बहुविधि से किया।
फिर डाक्टरों द्वारा तुम्हारा धर्म भी सब हर लिया॥
२८-हर औषधी में मद्य मांस शराब आदि मिलाय के।
सारी तपश्चर्य्या नशाई बार बार पिलाय के॥
पहले अनेकों कोस पैदल आप जाते थे चले।
जब से चली यह रेल बस दस कोस जा सकते भले॥
२९-सो भी वही जो अधिकतर रहते सदा हैं ग्राम में।
बासी शहर के साइकिल पर घूमते आराम में॥
ऐसा न घर एको बचा जिसमें न रोगी हो कहीं।
ज्यादा उमर तक देश के नवयुवक जीते हैं नहीं॥
३०-फिर भी चरस पीते व चण्डू खा रहे कोकीन हैं।
कुछ भंग छान अफीम के भी कुछ बड़े शौकीन हैं॥
कुछ पी शराब गली गली में डोलते बेहोश हैं।
ताड़ी पिये कुछ सो रहे घरमें पड़े खामोश हैं॥
३१-सिगरेट बीड़ी दस बरष के हाय बच्चें पी रहे।
रोगी बनें भारत निवासी इस तरह से जी रहे॥
कोई पराई नारि को फुसलाय कर ले भागते।
कुछ दिवसरख निज साथमें करि दुरदशा फिर त्यागते॥
३२-है उम्र साल पचास की पर ब्याह करने के लिये।
कोई कहीं तैयार हैं शिर मौर धरने के लिये॥

लड़की अधिक से अधिक आई ब्याह सोला साल की।
बारात उट्ठी धूम से सज कर चली जब पालकी॥
३३-घर में पहुँचते ही खुशी सब देख लड़की को हुये।
उसने उतर कर सासु आदिक के चरण खुश हो छुये।
दो चार बरषों में मगर बुढ़ऊ गये पर लोक को।
मैं क्या कहूँ उस वक्त फिर विधवाहृदय के शोक को॥
३४-तरुणी अवस्था पाय जब ज्वानी न हाय सही गई।
उसने किया व्यभिचार छिप तब दुरदशा उसकी भई॥
संयोग से फ़िर हमल उसके पेट में यदि रह गया।
तो तीर्थ आदिक में गिराया पाप मोल लिया नया॥
३५-कोई धरे शिर लट्ठ अपने भाइयों को लूटते।
देखा पराया माल तो बस बाज़ के सम टूटते॥
कोई बना कर बात ठगने का इरादा कर रहे।
कंगाल हो कर देश वासी पेट यों निज भर रहे॥
३६-फैशन सवार हुआ सभी के इस कदर इस देश में।
हैं नौकरी करते मगर फिरते नृपति के भेश में॥
शिर पर रखा कर बाल औ फिर जेब में डाली घड़ी।
सिगरेट पीते घूमते ले हाथ में सुन्दर छड़ी॥
३७-घर की फिकर कुछ भी नहीं कल को कहां से आयगा।
पूछा किसी ने तो कहा परमातमा दे जायगा॥
अब हाल नम्बरदार लोगों का ज़रा सुन लीजिये।
निज देश की इस दुरदशा पर ध्यान फिर कुछ दीजिये॥

३८-हैं शान मे अकड़े किसो से बोलते सीधे नहीं।
कुछ भी किसी ने कह दिया तो आप एँठ गये वहीं॥
जोड़ी बराबर की मिली तो फौजदारी फिर भई।
दौड़े अदालत में रियासत पास थी सो बिक गई॥
३९-फिरने लगे बस भोजनों से हो तवाह गली गली।
तब की पराई नौकरी सब शान बान गई चली॥
ज़िमिदार और रईश मतवाले शराब पिये हुये।
करते पड़े हैं मौज़ रंडी एक साथ लिये हुये॥
४०-उनको फ़िक़र कुछ भी नहीं है क्या कहां पर होरहा।
हा! हा! इसी से देश का धन धर्म है सब खो रहा॥
पर दीन दुखिया कृषक गिनते धूप छांह कभी नहीं।
करते परिश्रम रात दिन घर द्वार छोड़ पड़े कहीं॥
४१-फिर भी उन्हें मिलता नहीं भर पेट खाने के लिये।
मनमें फिकर लागान की है पर चुकाने के लिये॥
यदि ठीक मौके पर न पहुँचे तो पकड़ बुलवायँगे।
जूते चमारों से हमारी चाँद पर चलवायँगे॥
४२-ज़िमिदार क्रोधी हैं बड़े उनके न है बिलकुल दया।
अब क्या कहूँ परमातमा ही रूठ मेरे पर गया॥
सब बैल बधिया अन्न आदिक बेंच पोत चुका दिया।
निज जीविका हित नौकरी जाकर शहर में कर लिया॥
४३-प्रिय भाइयो इनको सताया है बहुत दिन आप ने।
परतन्त्र भारत को बनाया है इन्हीं के श्राप ने॥

अब भी समझ जाओ गुलामी से छुड़ाओ देश को।
सब एक होकर दीन दुखियों के मिटाओ क्लेश को॥
४४-विद्यार्थियो इस्कूल वा कालेज गंदे छोड़ दो।
शिक्षा गुलामी की वहां मिलती उसे तुम तोड़ दो॥
कांग्रेस में हो सम्मिलित सत्याग्रही बन जाइये।
होकर अहिंसात्मक मगर हुल्लड़ कहीं न मचाइये॥
४५-निज देश के हित जान जाये तो खुशी से दीजिये।
बनि वीर सैनिक अमर होकर विश्व में यश लीजिये॥
कोई विदेशी वस्तु इस्तेमाल में मत लाइये।
तकुली व चरखा निज घरों में आप खूब चलाइये॥
४६-फैशन भगा कर दूर सादा भेष ही धारण करो।
अब जेल तोप मशीन फांसी से नहीं बिल्कुल डरो॥
कांग्रेस की आज्ञा तुम्हे शिर धार लेना चाहिये।
इसकी बगावत जो करे फटकार देना चाहिये॥
४७-लाठी चलायें वे अगर तुम आह भी न करो कभी।
गोली चलायें तो तुरत निज खोलदो सीना सभी॥
पर कार्य्य बंद करो न जब तक ठीक होश बना रहे।
सरकार गोरी के मुकाबिल शान्ति युद्ध ठना रहे॥
४८-होगी विजय निश्चय हमारी क्यों कि ईश्वर साथ है।
रक्षा करेगा वह उसी का नाम दीना नाथ है॥
तुम सत्य पर कायम रहो अन्याय सब सहते रहो।
लूटें तुम्हारा माल लेकिन तुम न कुछ मुख से कहो॥

४९-अन्याय रावण ने किया था जब यहाँ पर अति बड़ा।
तब खून ऋषियों ने दिया था निज बदन से भर घड़ा॥
बस उस घड़ेभर खून से पैदा भईं थीं जानकी।
जो जानकी गाहक हुईं उस रावणा शैतान की॥
५०-सत्याग्रही प्रहलाद ने भी कष्ट कितने थे सहे।
पाई बिजय आखीर में इतिहास सब बतला रहे॥
उस भाँति तुमपितु मातुकी परवाह अब कुछ मत करो।
बनि देश दावाने सभी भू मातु के संकट हरो॥
५१-मरना सभी को एक दिन है मौत से डरना नहीं।
संग्राम है आखीर वीरो अब कसर करना नहीं॥
झंडा तिरंगा हाथ में लेकर निकल घर से पड़ो।
जय बोल भारत मातु की रण क्षेत्र में डट डट लड़ो॥
५२-देहात मे जाकर किसानों को सिखाना चाहिये।
हर ग्राम में कांग्रेस स्थापित कर दिखाना चाहिये॥
भर दो ठसाठस जेल सब खाली न रह जायें कहीं।
फिर भी समर जारी रहे यह बंद हो जाये नहीं॥
५३-हर एक अदना भी इसे हर तौर से पूरा करे।
जिससे जहाँ तक हो सके अब वह नहीं बिलकुल डरे॥
आज़ाद होगा देश भारतवर्ष निश्चय जानलो।
प्रिय भाइयो कहना सभी अब गानधी का मानलो॥
५४-निज देश नवयुबकों सुनो कहता 'उमेश' पुकार के।
अब देश द्रोही मत बनो आजाद खद्दर धार के॥
मैदान में डट जाव औ सीना सिपर निज खोलदो।
बसप्रेम में हो मग्न सब जय गान्धी की बोल दो॥

❀ राष्ट्रीय गायन ❀

फिकर नहीं है हमें जान की फांसी पै चढ़ जायेंगे।
मगर गुलामी से भारत को वेगि स्वतन्त्र बनायेंगे॥
चहे चलायें गोली कोई चहे चढ़ा दें शूली पर।
मगर राष्ट्र की विजय पताका जगह जगह फहरायेंगे॥
खादी पहिन पहिन करके हम सब सैनिक बन जायेंगे।
शेरों के सम गर्ज गर्ज कर सोता देश जगायेंगे॥
वस्त्र विदेशी लंदन से अब आने यहां नहीं देंगे।
चरखे से ही सूत कात कर खद्दर त्यार करायेंगे॥
शराब ताड़ी अफीम के भी ठेके रद्द करेंगे सब।
निबल देश भारत को अपने फिर हम सबल बनायेंगे॥
फैशन का अब भूत भगाकर सादी चाल चलेंगे हम।
कारीगरी देश अपने की हम सब को दिखलायेंगे॥
नमक टैक्स को रद्द करेंगे उसे बनायेंगे घर घर।
औ अन्न देश का हम अपने अब बाहर नहीं पठायेंगे॥
कहें 'उमेश' देश नवयुवको बोलो भारत माँ की जय।
गाँधी जी का यह संदेशा सब को जाय सुनायेंगे॥

❁ ख्याल ❁

कुछ ज्ञान मसीहाईका नहीं, हम नब्ज दिखाये जाते हैं।
दिल दर्द जिगर के दाग सभी, हम हाय छिपाये जातेहैं॥
आबाद मकां बरबाद किया, धोखेसेहमे हा! लूटलिया।
हैं बीरों के हम वीर अजी, जो चोर बनाये जाते हैं॥
ऐ हिन्द के आही नाले हैं, हा पड़े जिगर में छाले हैं।
मादरे हिन्द के लाल हैं हम, सब नाज़ उठाये जाते हैं॥
डायर खूबी दिखलाई थी, उस वक्त न याद दवाई थी।
सच बात सुनाने में साहब, हम जेल पठाये जाते हैं॥
थे दास बिरादर भी ऐसे, खाली आहें जावें कैसे।
यह न्याय भगत औ दत्त पै हैं, टापू भिजवाये जाते हैं॥
कुछ फूट अभी तक बाकी है, पैमा हाथों में शाकी है।
है वतन हमारा अब इस पै, हम खून बहाये जाते हैं॥
यह वक्त नहीं सख्ती झेलूं, बच्चा बन मिट्टी में खेलूं।
गर भूले हो तुम न्याय सुनो, हम याद दिलाये जाते हैं॥
यह वक्त नहीं मुह में ताले, डर नहीं चलें चाकू भाले।
मैं साफ लिखूं औ साफ कहूँ, क्या भेद छिपाये जातेहैं॥
यह भारत वीर करारा था, रावण को राम पछारा था।
बन दोस्त मेरा ज़र खून किया, हबको अब सब्र दिलातेहैं॥
तलवार तुपक औ तीर भी है, इस गर्दन पै शमशीर भीहै।
गोलों तक का है खौफ नहीं, हम गम को हटाये जाते हैं॥

आखीर समय यह याद रहे, उजड़ा ये चमन आबाद रहे।
मौजूद हजारों माली हैं, हम पेड़ लगाये जाते हैं॥
शिवशंकर खौफ़ न खाना है, देवी कुछ कर दिखलाना है।
हर चोट की एवज दूनी है, उनको समझाये जाते हैं॥

❀ महात्मा गांधी की ग्यारा शर्तें ❀

महात्मा गांधी की ग्यारा शर्तें, अमल में लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुझे सितमगर! ये शीश अपना झुकाना होगा॥
नशीली चीजें शराब गांजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥
हमारे सिक्के की दर को साहब! घटा बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक सिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा॥
लगान आधा करो जमी का, किसान जिससे जरा सुखी हों।
मुहकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा॥
फिजूल-खर्ची बिला जरूरत, जो फौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं तो आधा उसको, जरूर साहब घटाना होगा॥
बड़े बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफ़सर।
उसे मुआफ़िक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा।
स्वदेशी कपड़े करें तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पायें।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुम को लगाना होगा॥

समुद्र तट का जहाज वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के अधीन रख कर चलाना होगा॥
जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सजा मिली हो उन्हें न छोड़ो।
बकाया कैदी पोलीटिकल सब, तुरन्त साहब! छुड़ाना होगा॥
उठा लिये जांय राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौचौबिसदफा अलिफ है, उसेतोबिलकुलमिटाना होगा॥
अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठा कर।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा॥
मोहकमा खुफिया-पुलिस उठा दो या करदोउसको प्रजाके तावे।
हमें भी बन्दूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा॥

(झंडा गायन)

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में,
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा॥
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा,

इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए,
विश्व विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

(इति)

प्रिन्टर पं० राधामोहन बाजपेयी द्वारा
ब्राह्मण प्रेस-कानपुर में मुद्रित।